International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

भक्ति आंदोलन युगीन राष्ट्र-निर्माण में योगदान देने वाले प्रेरक तत्व

डा. अनिता जून
एसोसिएट प्रोफसर (इतिहास)
राजकीय महिला महाविद्यालय, करनाल

धार्मिक आन्दोलन को सफल बनाने में समाज सुधारक साहित्यकारों एवं भक्त-सन्तों का विशेष योदान रहा है। उनकी मान्यताओं का अध्ययन करने के बाद समाज में परिवर्तन हुए हैं। उन स्थितियों पर विचार करना बहुत आवश्यक है।

भक्ति आन्दोलन के सम्पूण परिवेश पर विचार कर चुके हैं हर आन्दोलन के पीछे कोई-न-कोई उद्देश्य अवश्य होता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है। डॉ0 आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव ने भक्ति आन्दोलन के दो उद्देश्यों की ओर संकेत किया है - प्रथम हिंदू धर्म का सुधार करके उसे मुसलमानों के भयंकर आक्रमणों और उनके द्वारा प्रचारित धर्मान्तरण की नीति का सामना करने के लिए तैयार करना, दूसरा हिन्दू मूसलमानों को एक करके उनमें मैत्री-संबंध स्थापित करना। भक्ति कालीन आन्दोलन का इतिहास में दोहरा महत्व है- प्रथम साहित्य के क्षेत्र में भक्तिकाल नाम से चर्चित है। इस युग में प्रमुख कवि कबीर, रैदास, नानक, दादू, दयाल, सुन्दरदास, मलूक दास, कुतबन, मंझन, जायसी, कुम्भनदास, नन्ददास, रसखान, मीराबाई, सूरदास, तुलसीदास आदि सभी मूलतः कवि थे जो इस आन्दोलन से जुड़े थे। कवि ही इस युग के निर्माता थे। उन्होंने जिस भक्ति भावना को जाग्रत किया, वह आज भी सब के हदय में विद्यमान है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

डॉ0 ईश्वरी प्रसाद ने लिखा है – विस्तृत अर्थ में इतिहास मानव जीवन के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करता है और यदि हम इस अर्थ को ग्रहण करें तो मध्यकालीन भारत का इतिहास भी केवल राजदरबारों के घात, प्रतिघातों तथा अन्त:पुर के गुप्त षड्यन्त्रों की कथा न रहकर विजयों तथा शासन के क्षेत्र में महान् सफलताओं का और सामाजिक एवं धार्मिक आन्दोलनों का इतिहास बन जायेगा। मानव–जाति के कार्यो में एक प्रकार की निरन्तरता रहती है और इतिहास का एक काल दूसरे काल के साथ अविच्छेय रूप से ससंधित होता है। उग्र–परिवर्तन कभी–कभी ही होते है। औरर एक युग अदृष्ट रूप से दूसरे युग में परिणत हो जाता है। प्राय: ऐसा होता है कि संक्रांतिकाल में महत्वपूर्ण घटनाओं के वास्तविक प्रणेता इतिहास के रंगमंच के यथार्थ अभिनेता अपने अभिनय के महत्व को समझ नहीं पाते। वे कार्यो में इतने डूबे रहते हैं कि अपने अभिनय और प्रयासों में इतने व्यस्त रहते हैं कि उन्हें अपने उद्योग से परिवर्तित परिवर्तनों का आभास ही नहीं होने पाता। समय–समय पर समाज में क्रान्तियाँ होती हैं। बड़े–बड़े आन्दोलन चलाये जाते हैं। सारा संसार उससे प्रभावित होता है। परिणाम यह होता है कि समाज में परिवर्तन होने लगता है। इस संदर्भ में डॉ0 ईश्वरी प्रसाद ने लिखा है – "निरंकुश शासन के स्थान पर स्वतंत्रता आ विराजती है, कट्टरता का स्थान उदार विश्वसनीय भावनायें ग्रह कर लेती हैं। हमारे विचार और आदर्श नये रूप में ढाले जाने के लिए नये साँचों में जा पड़ते हैं और तब भी यह नहीं देख पाते कि जिस धरती पर हम खड़े हैं, वह शायद हमारे ही द्वारा बदली जा रही है। हम अनजाने में ही महान क्रांतियों के संचालक और जन्मदाता बन जाते हैं, और हम उस प्रभाव के विस्तार को शायद ही कभी अनुभव कर पाते हैं जो हम अपने युग पर डाल रहे होते हैं। और जो हमारा युग हम पर फैला रहा होता है ऐसे

अवसर भी कम नहीं होते, जब हम उन असंख्या नर–नारियों के विषय में विचार किये बिना ही जिन्होंने असीम परिश्रम और धैर्य से सामाजिक और राजनैतिक पुनरूत्थान का महान् कार्य सम्पन्न किया है और जिन्होंने अनेकानेक प्रकार से उस युग को गौरवान्वित किया है, जिसमें हम रह रहे हैं। अपने महान् मानवीय रिक्थ्य का उपयोग करने लगते हैं और सामाजिक विकास के फलों का आनन्द लेने लगते हैं।

भक्तिकाल के युग के विषय में उन्होनें अपने धर्म विस्तार के संबंध में अनुमान नहीं किया होगा। संयुक्त प्रयास से एक सामाजिक क्रान्ति को जन्म दिया है, जिसने एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया है। क भक्ति भावना हर दिशा में फैल गई।

यूरोप में प्राचीन परम्पराओं का अनुकरण करते रहे, जिससे उनमें विकास क्रमशः होता रहा है। लेकिन भारत का इतिहास कुछ दूसरे ही मार्ग पर अग्रसित हुआ डॉ0 ईश्वरी प्रसाद की मान्यता है – "समय–समय पर विदेशी आक्रमण भारत की प्राचीन परम्पराओं की शृखला को भंग करते रहे हैं और कभी–कभी तो विदेशी शासन के घातक प्रभाव से भारतीय संस्थाओं और प्रणालियों को लुप्त होना पड़ा है"। भारतीय जनता को अपनी शासन–प्रणाली को छोड़कर विजेताओं के साथ बाहर से आई हुई प्रणाली के अनुसार शासित होना पड़ा है। इसके राजनीतिक विकास को समय–समय पर गहरे आघात लगते रहे हैं, और विदेशी शासन भारत में राष्ट्रीय और सार्वजनिक कर्त्व्यों के आदर्शों के स्वस्थ विकास में बड़ी–बड़ी बाधायें पहुँचाते रहे हैं। परन्तु यह सब कुछ सत्य होते हुए भी भारत के सांस्कृतिक इतिहास का सूत्र किसी भी काल में टूटने नहीं पाया है और भारतीय जनता के सामाजिक एवं धार्मिक जीवन के मूल तत्व सदैव एक से बने रहे हैं, कोई भी इतिहासकार इस महान् सत्य से आँखें नहीं मूंद सकता।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 12, December- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

10वी. शताब्दी के आस-पास सम्पूर्ण भारत छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था। ऐसा कोई भी शासक नहीं था जो पूरे भारत को एक सूत्र में बाँध सके। राष्ट्रशक्ति विघटित हो चुकी थी, यदि हम धर्म के संबंध में विचार करें तो कोई भी ऐसा धर्म वक्त नहीं था जो सही मार्ग दर्शन कर सकें। "अन्धविश्वास फैलने लगा, जिससे धर्म दूषित होने लगा"।अन्ततः रामानन्द, कबीर, नानक जैसे संतो ने अन्धविश्वास पर कठोर प्रहार किये, इस्लाम की विजय से परस्पर युद्धरत राज्यों के स्थान पर एक साम्राज्य की स्थापना हुई और समस्त देश की जनता को एक शासक की वशवर्तिता की शिक्षा मिली इससे हमारे राष्ट्रीय जीवन में शक्ति के कुछ नये तत्वों का समावेश हुआ और एक नई संस्कृति का आगमन हुआ। मध्यकाल में यद्यपि हिंदुओं के हाथ से राजनीतिक शक्ति छिन गई थी, किन्तु हिंदू संस्कृति की धारा अबाध गति से प्रवाहमान होती रही। मध्यकाल का भक्ति आन्दोलन इस सत्य का साक्षी है, मुसलमानों ने नगरों में अपनी प्रभुता के केन्द्र स्थापित किये थे, देहातों में परिवर्तन के लक्षण नहीं दृष्टिगत हो रहे थे, मुसलमान की विजय ने भारत में एक क्रांति उत्पन्न की, बौद्ध भिक्षुओं और ब्राह्मण दार्शनिकों के स्थान पर दृढ़ तुर्क यौद्धाओं के आ जाने पर भारत के इतिहास में एक नये युग का सूत्रपात हो गया। मुसलमान आक्रांताओं का सामना भी हिंदू जनता ने गम्भीरता से नहीं किया, कदाचित हिंदू यही सोचते रहे कि जिस तरह से श्क, हूण, सिंधियन इत्यादि जातियाँ हिंदू-समाज में मिलकर एक हो गई थी। मुसलमान भी हिंदुओं में हिल-मिल जाएँगे और उनकी पृथक सत्ता समाप्त हो जाएगी परन्तु ऐसा नहीं हुआ। मुसलमानो ने हिंदू समाज का अंग बनना कदापि स्वीकार नहीं किया।

भारत के टुकड़े-टुकड़े में बिखर जाने के कारण सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों में बदलाव तेज़ी से होने लगा, मुसलमानों के आने से राजनीतिमक अव्यवस्था के साथ धार्मिक क्षेत्र में भी परिवर्तन होने लगे उत्पीड़न और असुरक्षा की भावना से देश का सामाजिक जीवन भी क्षीण और विच्छित्र हो चुका था। समाज में अंधविश्वास तथा कुरीतियाँ फैल गई थीं। ऐसी स्थिति में देश की बागडोर संतो ंके हाथो में आ गई थी। समाज को एक नई दिशा देने वाले कवि ही थे। कवियों ने समाज, धर्म, राजनीति, साहित्य तथा आचार-विचारों पर गहरा प्रभाव डाला। इन समाज सुधारक कवियों एवं संतों ने मार्ग प्रशस्त किया।

सन्दर्भ-सूची

1. डॉ0 आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, दि हिस्ट्री ऑफ इंडिया (1000 AD-1707 AD) प्रथम संस्करण : 1664, आगरा, पृष्ठ 293 ।
2. डॉ0 ईश्वरी प्रसाद, भारतीय मध्य युग का इतिहास (1200 से 1526 ई0) संस्करण: 1555, इलाहाबाद, भूमिका पृष्ठ-क ।
3. डॉ0 ईश्वरी प्रसाद, भारतीय मध्य युग का इतिहास (1200 से 1526 ई0) संस्करण: 1955, इलाहाबाद, विषय प्रवेश, पृष्ठ-3 ।
4. वही, पृष्ठ 3 ।
5. डॉ0 ईश्वरी प्रसाद, भारतीय मध्य युग का इतिहास (1200 से 1526 ई0) संस्करण: 1955, इलाहाबाद, विषय प्रवेश, पृष्ठ-4 ।
6. वही, पृष्ठ 16 ।
7. वही, पृष्ठ 17 ।